गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १३

एक पाश्चात्य रहस्यवेत्ता अंगेलुस सिलीज़ियोस ने कहा है, "जैसा कि हम जानते हैं, जो परमोच्च है वह सर्वथा अपरिमित है और फिर भी एक मानव-हृदय पूरी तरह उसे अपने में समा सकता है!"

विस्मय के इसी भाव के साथ, 'काश्मीर शैवदर्शन' का एक शास्त्र कहता है, "हे प्रभु, आपने स्वयं को मानव-शरीर में छिपा रखा है। कैसा रहस्य है!"

इस मानव-शरीर में महान सत्य निवास करता है। वह पूरा का पूरा तुम्हारा है। उसे खोजो।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय २ "अस्तित्व की शुद्धि," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. २१।